Ñfr % fo'kn Jh HkDrkej e.My foèkku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2013* izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lgk;d % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh

la;kstu % lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZy dqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907¼?kj½ eks- %9414812008

2 Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cq) foGkj] vyoj] eks- %9414016566

3 fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4 fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j ykycÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 31@&#- ek=k

µ% vFkZ lkStU; %µ

श्रीमति सरोज जैन (मातेश्वरी)

श्री पंकज जैन श्रीमति रेणू जैन (पुत्र-पुत्रवधू)

श्री पीयूष जैन (पुत्र), सुश्री प्रेरणा जैन (पुत्री)

कृष्णा नगर, दिल्ली

eqnzd% ikjl izdk'ku ¼'kkgnjk fnYyh½ Qksu ua- %9811374961

अन्तस् की पुकार

विशद मोक्ष मार्ग पर बढ़ने के दो साधन हैं **1. भक्ति मार्ग, 2. तपमार्ग** भक्तिमार्ग में भक्त प्रभु गुणगान में एकाग्र-तल्लीन हो जाता है तो अपनी सुध-बुध भूल जाता है। उसे बाहर की दुनियाँ का ज्ञान और भान नहीं रहता। इतिहास में अनेक स्थानों पर भक्ति मार्ग के उदाहरण देखे जाते हैं चाहे वह मुनि चद्रगुप्त का रहा हो या मीरा और राधा का रहा हो या आदिनाथ की भक्ति में मानतुंग स्वामी का, इसी का फल है कि आज भक्तामर स्तोत्र समस्त जैन समाज में आदर और श्रद्धा से पढ़ा जाता है। भक्तामर स्तोत्र सबसे अधिक ख्याति प्राप्त है लोग भक्ति रस की अविरल धारा में प्रवाहित हैं। भक्तामर स्तोत्र अनेक अलंकारों से भूषित सारगर्भित सूक्तियों से सज्जित है। इस स्तोत्र की लोक प्रियता का वर्णन करना असम्भव है इसे प्राय: सभी स्त्री पुरुष बाल वृन्द पढ़कर कंठस्थ करते हैं। आज संस्कृत ज्ञान का अभाव सा देखा जाने लगा है अत: संस्कृत की कठिनता को दूर करने के लिए अनेक कवियों साधुओं के द्वारा हिन्दी में विभिन्न छन्दों में सरस रचनाएँ की गई हैं। यह **''आदिनाथ स्तोत्र''** जो भक्तामर स्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध है अनेक श्रद्धालुओं द्वारा पाठ जाप पूजाविधान करके लाभ प्राप्त किया गया है भक्तामर स्तोत्र की रचना एक ऐतिहासिक घटना से जुड़ी हुई है। श्री मानतुंग आचार्य एक महान तपस्वी जैन मुनि थे। उज्जैन नगर के राजा भोज के दरबार में कवि कालिदास थे। मुनिराज की ख्याति से ईर्ष्या पीड़ित कवि कालिदास ने राजा से मुनिराज को दरबार में बुलाने का आग्रह किया जिससे शास्त्रार्थ हो सके। मगर वीतरागी मुनिराज को राज दरबार से भला क्या सरोकार। उन्होंने राज दरबार में जाने से इंकार कर दिया। इस पर कुटिल कालिदास ने राजा को उकसाया और राजा भोज ने राजमद में अंधे होकर मुनिराज को पकड़वाकर बुलवा लिया और हथकड़ी/बेड़ी डलवा कर अड़तालीस तालों के अन्दर बन्दीगृह में कैद करवा दिया। अपने पर उपसर्ग आया जानकर मुनिराज ने शान्त भाव से आदिनाथ भगवान् की स्तुति करते हुए **'भगवान 1008 श्री आदिनाथ-स्तोत्र'** की रचना की जो कि मंत्र, यंत्र और ऋद्धि गर्भित है। इसके प्रभाव से सब बन्धन तड़-तड़ करके स्वयं टूट गये और मुनिराज बाहर आ गये। महाराज के दिव्य प्रभाव को देखकर, राजा और कालिदास ने लज्जित होते हुए बार-बार क्षमा मांगी। मुनिराज ने राजा को श्रावक के व्रत दिये और वन को प्रस्थान किया। भक्तामर की अर्चा हेतु विधान पूजन कर अपना जीवन मंगलमय बनाने हेतु यह

श्रेष्ठ सेतु है कृति में शब्दों की शुद्धि का विशेष ध्यान रखा गया है फिर भी **''को न विमुह्यते शास्त्र समुद्रे''** इस नीति के अनुसार त्रुटियाँ होना स्वभाविक है अत: विज्ञजनों से निवेदन है कृपया सुधार कर पढ़ें एवं सूचित करें जिससे सुधार किया जा सके।

–आचार्य विशदसागर जी महाराज

भक्तामर व्रत विधि

श्री जिनेन्द्रदेव की भक्ति मुक्ति रमा को प्राप्त करने के लिए एक सरल साधन है जिन के गुणों का कीर्तन करने से विघ्न नाश होते हैं, भय दूर भागता है दुष्ट देवता आक्रमण नहीं करते और हमेशा अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति होती है। यद्यपि चिन्तामणि रत्न तथा कल्पवृक्ष अचेतन हैं तथापि पुण्यवान पुरुषों को उनके पुण्य के अनुसार विविध प्रकार के अभीसिप्त फल देते हैं। जिनेन्द्र भक्ति के माहात्म्य का सुफल संसार बंधन से विमुक्त होकर जन्म मरण रहित परमात्मा बन जाना है।

इसी श्रृंखला में आचार्य श्री मानतुंग महाराज ने आदिनाथ भगवान की भक्ति से एक अनोखा करिश्मा करके दिखाया। उनके द्वारा की गई श्री आदिनाथ की स्तुति से जेल के अड़तालीस लौह कपाट स्वयं खुल गये। इस अतिशयपूर्ण घटना से प्रभावित होकर राजा भोज ने मुनिराज से श्रावक के व्रत लिए और अपने राज्य में जैन धर्म का विशेष प्रचार एवं प्रसार कराया।

जैन समाज में भक्तामर स्तोत्र सबसे अधिक प्रसिद्धि को प्राप्त है। भक्तामर स्तोत्र के 48व्रत होते हैं। एक-एक काव्य को आधार बनाकर 48 व्रत किये जाते हैं। हर महीने की अष्टमी, चतुर्दशी को यदि व्रत करते हैं तो एक वर्ष में 48 व्रत पूर्ण हो जाते हैं। व्रतों के दिन अभिषेक नित्य-नियम पूजा के बाद भक्तामर पूजा व हर काव्य की अलग-अलग जाप्य यहाँ दी जा रही है वह करना चाहिए। 48 व्रत पूर्ण होने पर भव्य स्तर पर भक्तामर विधान कर व्रत का उद्यापन करना चाहिए। चारों प्रकार का यथायोग्य दान करना चाहिए।

संकलन–मुनि विशाल सागर

मंगलाष्टक

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हो मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांति शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रयधारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर के मात-पिता यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पंच प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।
पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, सप्त बुद्धि ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी॥
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥7॥

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार॥
रूप्यादिक कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥8॥

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में॥
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशयय भारी।
कल्याणक पाँचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी॥9॥

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याणक महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा॥
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी॥10॥

झण्डारोहण विधि

ॐ ह्रीं महीपूतां कुरु-कुरु ह्रूँ फट् स्वाहा। (भूमि शुद्ध करें।)

ॐ अस्मिन् यज्ञ स्थाने स्थित देवगणाः आज्ञा प्रदानं कुर्युः विघ्न निवारणार्थं अत्र आगच्छ-आगच्छ। (फल भेंट करें।)

ॐ ह्रीं क्षीं भूः स्वाहा। (जल से शुद्धि) (विनायक यंत्र पूजन करें)

ॐ ह्रीं अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यम्। (अर्घ चढ़ावें)

ॐ ह्रीं परम ब्रह्मणे नमोनमः स्वस्ति स्वस्ति नंद नंद वर्धस्व वर्धस्व विजस्व विजस्व पुनीहि पुनीति पुण्याह पुण्याह मांगल्यं मांगल्यं वर्धयेत् वर्धयेत जय जय।

ॐ ह्रीं सर्वोषधिद्वारा ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ॐ ह्रीं श्री नमोऽर्हते पवित्रजलेन ध्वजदण्ड शुद्धिं करोमि।

ॐ ह्रीं त्रिवर्ण सूत्रेण ध्वजदण्डं परिवेष्टयामि। ॐ णमो अरहंताणं स्वाहा। रत्नत्रयात्मकतयाऽभिमतेऽत्रदण्डे, लोकत्रये प्रकृत केवलबोधरूपम्। संकल्प्य पूजितमिदं ध्वजमर्च्य लग्ने, स्वारोपयामि सन् मंगल वाद्य घोषे॥

ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं स्वस्ति भद्रं भवतु सर्वलोकस्य शांतिर्भवतु स्वाहा तथा ॐ ह्रीं अर्हं जिनशासन पताके सदोच्छिता तिष्ठ तिष्ठ भव भव वषट् स्वाहा।

(पुष्प क्षेपण कर वाद्य घोष करते हुए परिक्रमा करें)

ध्वज गीत

(तर्ज : जन गन मन अधिनायक...)

तीन लोक अधिनायक जय हे, अर्हत् सिद्ध विधाता।
मोक्षमार्ग के अनुपम नायक, जग में शांति प्रदाता॥
गणधरादि तुम नमते, साधु चरण प्रणमते, हे मुक्ति पद दाता।
मण्डल की पूजा विधान में, पहले ध्वज फहराता।
जय हे-जय हे-जय हे-जय जय जय जय हे॥
हे जग में शांति प्रदाता॥1॥

पञ्च परम, परमेष्ठि जग में, मोक्ष मार्ग दर्शाते।
भवि जीवों से तीन लोक में, वह सब पूजे जाते॥
उनके गुण हम गाएँ, पद में शीश झुकाएँ, हे भविजन के त्राता।
विशद भाव से आज झुका है, ध्वज के आगे माथा॥
जय हे...॥3॥

हस्त प्रक्षालन—ॐ ह्रीं असुजर सुजर स्वाहा।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्म महापद्म त्रिगिंछ केसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगा सिन्धु रोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्ण रूप्यकूला

रक्ता-रक्तोदा पयोधि शुद्ध जल सुवर्ण घट प्रतिक्षप्त नवरत्न गंधाक्षत पुष्पार्चितमोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झौं झौं वं वं मं मं हं हं क्षं क्षं लं लं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं हं सः स्वाहा।

अंगन्यास विधि

इस मंत्र का उच्चारण कर अंगुष्ठों पर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर तर्जनियों पर सिर झुकावें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर मध्यमाओं पर सिर झुकावें।

ॐ ह्रूं णमो आयरियाणं ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर अनामिका पर सिर झुकावें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं अनामिकाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर कनिष्ठाओं पर सिर झुकावें।

ॐ ह्र णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर करतलों (गदियों) पर सिर झुकावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः करतलाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर हथेलियों के ऊपरी भाग पर सिर झुकावें।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः करपृष्ठाभ्यां नमः।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से सिर का स्पर्श करें। फिर

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां मम शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से मुख का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं मन वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से हृदय का स्पर्श करें।

ॐ ह्रूँ णमो आयरियाणं ह्रूँ मम हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से नाभि का स्पर्श करें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दाहिने हाथ से पैरों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः मम पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने शरीर का स्पर्श करें।

ॐ ह्रां: णमो अरिहंताणं ह्रां मम गात्रे रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने वस्त्रों का स्पर्श करें।

ॐ ह्रीं: णमो सिद्धाणं ह्रीं मम वस्त्रं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पूजा की सामग्री का स्पर्श करें।

ॐ ह्रूँ: णमो आयरियाणं ह्रूँ मम पूजाद्रव्यं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर अपने खड़े होने की जगह की ओर देखें।

ॐ ह्रौं: णमो उवज्झायाणं ह्रौं मम स्थलं रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर चुल्लू में जल लेकर सब ओर फैकें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्व जगत् रक्ष रक्ष स्वाहा।

इस मंत्र से चुल्लू के जल को मंत्र कर अपने सिर पर सींचें।

ॐ ह्रीं: अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय सं सं क्लीं क्लीं ब्लूं ब्लूं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ठः ठः ह्रीं स्वाहा।

(यह मंत्र पढ़कर परिचारकों पर पुष्प छोड़ें)

ॐ नमोऽर्हते सर्व रक्ष-रक्ष ह्रूँ फट् स्वाहा।

रक्षासूत्र बन्धन मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं ह्रूः अ सि आ उ सा सर्वोपद्रवशान्तिं कुरु कुरु।

ॐ नमोंऽर्हते भगवते तीर्थंकर परमेश्वराय कर पल्लवे रक्षाबंधनं करोमि एतस्य समृद्धिरस्तु। ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं नमः स्वाहा।

तिलक करण मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं अ सि आ उ सा अनाहतपराक्रमाय ते भवतु। यह मंत्र पढ़कर गृहस्थाचार्य सभी पात्रों को तिलक लगावें।

दिग्वन्दना मंत्र

यह मंत्र पढ़कर पूर्व दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रां णमो अरिहंताणं ह्रां पूर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर दक्षिण दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं ह्रीं दक्षिणदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पश्चिम दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्वूं णमो आयरियाणं ह्वूं पश्चिमदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर उत्तर दिशा में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रौं णमो उवज्झायाणं ह्रौं उत्तरदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर सर्वदिशाओं में पीले चावल या सरसों क्षेपें।

ॐ ह्रः णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः सर्वदिशासमागतान् विघ्नान् निवारय निवारय एतान् रक्ष रक्ष स्वाहा।

परिणाम-शुद्धि-मन्त्र

विधिं विधातं यजनोत्सवे, ऽगेहादिमूच्छमिपनोदयामि।
अनन्यचिंता कृतिमादधामि, स्वर्गादि लक्ष्मीमपि हापयामि॥

यह पढ़कर पात्रों से गृहस्थी के कार्यों से प्रकृत विधानपर्यन्त निवृत्त रहने की प्रतिज्ञा कराई जावे।

रक्षा मन्त्र

इस मन्त्र से पीले चावलों या पीले सरसों को सात बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर पुष्प प्रक्षेप किया जावे।

ॐ नमो अर्हते सर्व रक्ष रक्ष ह्वूँ फट् स्वाहा।

शान्ति मन्त्र

इस मन्त्र से भी पीले सरसों या चावलों को तीन बार मन्त्रित कर सभी पात्रों पर प्रक्षेप किया जावे।

ॐ क्ष्वूं ह्वूं फट् किरीटिं घातय घातय, परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय, सहस्त्रखण्डान् कुरु, कुरु, परमुद्रां छिन्द छिन्द, परमंत्रान् भिन्द भिन्द, क्षां क्षः फट् स्वाहा।

यज्ञोपवीत धारण मन्त्र

यह मंत्र पढ़कर पुरुष पात्रों को 'यज्ञोपवीत' पहिनाया जावे।

ॐ नमः परमशान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकरणायाहंरत्नत्रय चिन्ह यज्ञोपवीतं दधामि मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

यह मंत्र पढ़कर पात्रों पर जल छिड़ककर उनकी अंतिम शुद्धि की जावे।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्वूँ ह्रौं ह्रः ऐतेषां पात्रशुद्धिमंत्र सर्वांगशुद्धिः भवतु।

5 बार मंत्र पढ़कर मण्डप शुद्धि करें।

ॐ क्षां क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः प्रतिष्ठा मण्डप शुद्धि कुर्मः।

कलश में सामग्री रखने का मंत्र

ॐ ह्रीं अर्हं अ सि आ उ सा नमः मंगल कलशे मंगल कार्य निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थं पूंगी फलानि प्रभृति वस्तुनि प्रक्षिपामीति स्वाहा।

मंगल कलश स्थापना मंत्र

ॐ अद्य भगवतो महापुरुषस्य श्रीमदादिब्रह्मणे मतेऽस्मिन् विधीयमाने श्री भक्तामर महामण्डल विधान कार्यं। ...श्री वीर निर्वाण संवत्सरे, ...मासे, ...पक्षे, ...तिथौ, ...दिने, ...लग्ने, भूमिशुद्धयर्थं, पात्रशुद्धयर्थं, शान्त्यर्थं पुण्याहवाचनार्थं नवरत्नगन्धपुष्पाक्षत श्रीफलादिशोभितं शुद्धप्रासुकतीर्थजलपूरितं मंगलकलशस्थापनं करोमि श्रीं ह्रीं ह्रीं हं सः स्वाहा।

दीपक स्थापना

रुचिरदीप्तिकरं शुभदीपकं, सकललोकसुखाकर-मुज्ज्वलम्।
तिमिरजालहरं प्रकरं सदा, किल धरामि सुमंगलकं मुदा॥

ॐ ह्रीं अज्ञानतिमिरहरं दीपकं स्थापयामि।

(मुख्य दिशानुसार आग्नेय कोण में दीपक स्थापित करें।)

शास्त्र स्थापना

अरहंत-भामियत्थं गणहर-देवेहिंगंथियं सम्मं।
पणमामि भक्तिजुत्तो सुदणाण-महोवहिंसिरसा॥

ॐ ह्रीं जिन मुखोदभूत रत्नत्रय स्वरूप जिन शास्त्र स्थापयामि स्वाहा।

जिनेन्द्र-स्नपन-विधि (अभिषेक पाठ)

(हाथ में जल लेकर शुद्धि करें)

शोधये सर्वपात्राणि पूजार्थानऽपि वारिभिः।
समाहितौ यथाम्नाय करोमि सकली क्रियाम्॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा
नमः पवित्रतर जलेन सर्वांग शुद्धि करोमि इति स्वाहा।

(नीचे लिखा श्लोक पढ़कर जिनेन्द्रदेव के चरणों में पुष्पांजलि क्षेपण करना।)

श्रीमज् जिनेन्द्र - मभि - वन्द्य जगत् त्रेशं,
स्याद्वाद - नायक - मनन्त - चतुष्टयार्हम्।
श्री - मूलसंघ - सुदृशां सुकृतैक - हेतुर्,
जैनेन्द्र - यज्ञ - विधि - रेष मयाभ्य - धायि॥1॥

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भूः स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर यज्ञोपवीत, माला, कंगन और मुकुट धारण करना।)

श्रीमन्मन्दर - सुन्दरे शुचि - जलै - र्धौतेः सदर्भाक्षतैः,
पीठे मुक्तिवरं निधाय रचितं त्वत् पाद-पद्म-स्रजः।
इन्द्रोऽहं निज-भूषणार्थक - मिदं यज्ञोपवीतं दधे,
मुद्रा-कंकण-शेखरण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे॥2॥

ॐ नमो परम शान्ताय शान्तिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय-स्वरूपं यज्ञोपवीतं दधामि। मम गात्रं पवित्रं भवतु अर्हं नमः स्वाहा।

(अग्रलिखित श्लोक पढ़कर अनामिका अंगुली से नौ स्थानों (मस्तक, ललाट, कर्ण, कण्ठ, हृदय, नाभि, भुजा कलाई और पीठ) पर तिलक करें।)

सौगन्ध - संगत - मधुव्रत - झंकृतेन,
संवर्ण्य - मान - मिव गंध - मनिन्द्य - मादौ।
आरोप - यामि विबु - धेश्वर - वृन्द - वन्द्य-
पादारविन्द - मभिवन्द्य जिनोत् - तमानाम्॥3॥

ॐ ह्रीं परम-पवित्राय नमः नवांगेषु चन्दनानुलेपनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

ये सन्ति केचि-दिह दिव्य कुल प्रसूता,
नागाः प्रभूत-बल-दर्पयुता विबोधाः।
संरक्षणार्थ - ममृतेन शुभेन तेषां,
प्रक्षाल-यामि पुरतः स्नपनस्य भूमिम्॥4॥

ॐ ह्रीं जलेन भूमिशुद्धिं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठ/सिंहासन का प्रक्षालन करना।)

क्षीरोर्णवस्य पयसां शुचिभिः प्रवाहैः,
प्रक्षालितं सुरवरैर्-यदनेक-वारम्।
अत्युद्-धमुद्यत-महं जिन-पादपीठं,
प्रक्षाल-यामि भव-सम्भव-तापहारि॥5॥

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर सिंहासन पर श्री लिखें।)

श्री-शारदा-सुमुख-निर्गत बीजवर्णं,
श्रीमंगलीक-वर-सर्व जनस्य नित्यम्।
श्रीमत् स्वयं क्षयति तस्य विनाश्य-विघ्नं,
श्रीकार-वर्ण-लिखितं जिन-भद्रपीठे॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार-लेखनं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पीठिका पर श्रीजी विराजमान करें।)

यं पाण्डुकामल-शिलागत-मादिदेव-
मस्नापयन् सुरवराः सुर-शैल-मूर्ध्नि।
कल्याण-मीप्सु-रह-मक्षत-तोय-पुष्पैः,
सम्भावयामि पुर एव तदीय बिम्बम्॥7॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री धर्मतीर्थाधिनाथ! भगवन्निह पाण्डुक शिला-पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा। जगतः सर्वशान्तिं करोतु।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर पल्लवों से सुशोभित मुखवाले स्वस्तिक सहित चार सुन्दर कलश सिंहासन के चारों कोनों पर स्थापित करें।)

सल्पल्ल-वार्चित-मुखान् कलधौत-रौप्य-
ताम्रार-कूट-घटितान् पयसा सुपूर्णान्।

संवाह्यतामिव गतांशचतुरः समुद्रान्,
संस्थापयामि कलशाञ्जिन-वेदिकांते॥8॥

ॐ ह्रीं स्वस्तये पूर्ण-कलशोद्धरणं करोमि स्वाहा।

(निम्नलिखित श्लोक पढ़कर अभिषेक करें।)

दुरावनम्र सुरनाथ किरीट कोटी-
संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूस-राघ्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तमपि प्रकृष्टैर्-
भक्त्या जलै-र्जिनपतिं बहुधाभिषिंचे॥9॥

(चारों कलशों से अभिषेक करें।)

अभिषेक मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं क्षीं क्षीं झवीं झवीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

इष्टै-र्मनोरथ-शतैरिव भव्य-पुंसां,
पूर्णैः सुवर्ण-कलशै-र्निखिला-वसानैः।
संसार-सागर-विलंघन-हेतु-सेतु-
माप्लावये त्रिभुवनैक-पतिं जिनेन्द्रम्॥10॥

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसन्तं वृषभादि-वर्धमान पर्यन्तं-चतुर्विंशति- तीर्थंकर-परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखण्डे...देशे...प्रान्ते... नाम्नि नगरे श्री 1008...जिन चैत्यालयमध्ये वीर निर्वाण सं...मासोत्तममासे... पक्षे...तिथौ...वासरे...पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका-श्रावक-श्राविकानां सकल-कर्म-क्षयार्थं जलेनाभिषिंचे नमः स्वाहा।

सुगन्धित कलश से अभिषेक करें

द्रव्यै-रनल्प-घनसार-चतुःसमाद्यै-
रामोद-वासित-समस्त-दिगन्तरालैः।
मिश्री-कृतेन पयसा जिन-पुंगवानां,
त्रैलोक्य पावनमहंस्नपनं करोमि॥1॥

अभिषेक मंत्र–ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ..... जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, अब तक प्रभु गोते खाए हैं।
अब कर्म मैल के धोने को, जलधारा करने आए हैं॥

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीपसुधूपफलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याणमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीं परम देवाय श्री अर्हत् परमेष्ठिनेऽर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

लघु शान्ति धारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः। श्री वीतरागाय नमः। ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय द्वादशगणपरिवेष्टिकाय, शुक्ल ध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयं भुवे, सिद्धाय, बुद्धाय, परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्य महीव्याप्ताय, अनन्त संसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनन्त वीर्याय, अनन्त सुखाय, सिद्धाय, बुद्धाय, त्रैलोक्यवशंकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणामंडल मण्डिताय, ऋष्यार्यिका-श्रावक-श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय, अपवायं छिंद-छिंद भिंद-भिंदं मृत्यु छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। रतिकामं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। क्रोधं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। अग्निभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वशत्रुं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वोपसर्गं छिंद-छिंद भिंद-भिदं। सर्वविघ्नं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराजभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमृगभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वात्मचक्रभयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपरमंत्र छिंद-छिंद भिंद-भिंदं सर्वशूल रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वक्षय रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकुष्ठ रोगं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वनरमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगजमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वाश्वमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगोमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमहषिामारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंदं सर्वधान्यमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववृक्षमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वगुल्ममारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपत्रमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वपुष्पमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वफलमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वराष्ट्र मारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व देशमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्व विषमारीं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेताल शाकिनी भयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्ववेदनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वमोहनीयं छिंद-छिंद भिंद-भिंद। सर्वकर्माष्टकं छिंद-छिंद भिंद-भिंद।

ॐ सुदर्शन-महाराज-मम-चक्र विक्रम-तेजो-बल शौर्य-वीर्य शान्तिं कुरु-कुरु। सर्व जनानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व भव्यानंदनं कुरु-कुरु। सर्व गोकुलानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व ग्राम नगर खेट कर्वट मटंब पत्तन द्रोणमुख संवाहनन्दनं कुरु-कुरु। सर्व लोकानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व देशानंदनं कुरु-कुरु। सर्व यजमानन्दनं कुरु-कुरु। सर्व दुःख हन-हन, दह-दह, पच-पच, कुट-कुट, शीघ्रं-शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु व्याधि-व्यसन-वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं स्वस्ति-रस्तु विधीयते॥

श्री शांति-मस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु। चन्द्रप्रभु-वासुपूज्य- मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदंत-शीतल-मुनिसुव्रतस्त-नेमिनाथ-पार्श्वनाथ-इत्येभ्यो नमः।

इत्यनेन मंत्रेण नवग्रहाणां शान्त्यर्थं गंधोदक धारा-वर्षणम्।

शांति मंत्र-ॐ नमोऽर्हते भगवते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्य तेजो मूर्तये नमः श्री शान्तिनाथ शान्ति कराय सर्व विघ्न प्रणाशनाय सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय सर्व पर कृच्छ्रुद्रोपद्र विनाशनाय सर्व क्षामडामर विघ्न विनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः सर्व देशस्य सर्व राष्ट्रस्य सर्व संघस्य तथैव मम् सर्व शान्ति तुष्टिं पुष्टिं च कुरु कुरु वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांतिः निरन्तर तपोभव भावितानां॥
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां॥
संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांति भगवान जिनेन्द्रः॥
अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतु, प्रभु जल की धारा देते हैं॥

अर्घ-उदक चन्दन...जिन-नाथ-महं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है...)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबम्बो की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है॥
(1) दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी॥
(2) मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभु जी, द्वार आपके आए हैं॥
(3) शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया ही॥
(4) हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं॥
(5) नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिर नाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं॥
जिनवर का...!

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभु, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥

भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभु! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहें, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ति धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते विशद प्रणाम॥

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान॥1॥

मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध॥2॥

मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय॥3॥

मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म॥4॥

मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव॥5॥

इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धि सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार॥6॥

मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान॥7॥

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)
(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वादः

पूजन प्रारंभ

ॐ जय जय जय। नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥1॥
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। *(पुष्पांजलि क्षेपण करना)*

चत्तारि मंगलं अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलि-पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केविल पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो। चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलि-पण्णतं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पांजलि क्षिपामि)

अपवित्र पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंचनमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते॥1॥
अपवित्र पवित्रो वा सर्वावस्थांगतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं स बाह्याभ्यन्तरे शुचिः॥2॥
अपराजित-मंत्रोऽयं सर्वविघ्न-विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथम मंगलम् मतः॥3॥
एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं॥4॥
अर्हमित्यक्षरं ब्रह्म-वाचकं परमेष्ठिनः।

सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्रणमाम्यहं।।5।।
कर्माष्टकविनिर्मुक्तं मोक्षलक्ष्मी निकेतनम्।
सम्यक्त्वादिगुणोपेतं सिद्धचक्रं नमाम्यहं।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयम् याान्ति शाकिनी-भूतपन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं भगवतो-गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंचकल्याणेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाथ महंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री अरिहन्तसिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु पंच परमेष्ठिभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिननाम महंयजे।।

ॐ ह्रीं भगवत् जिन अष्टोत्तर सहस्त्र नामेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे जिन सूत्र महंयजे।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यग्दर्शन ज्ञान चारित्राणितत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्री मज्जनेन्द्रमभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक मनंत चतुष्टयार्हम्।
श्रीमूलसंघ-सुदृशां-सुकृतैकहेतु-जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाऽभ्यधायि।।
स्वस्ति त्रिलोकगुरुवे जिनपुंगवाय, स्वस्ति-स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश सहजोर्ज्जितदृंग मयाय, स्वस्तिप्रसन्न-ललिताद्भुत वैभवाय।।
स्वस्त्युच्छलद्विमल-बोध-सुधाप्लवाय; स्वस्ति स्वभाव-परभावविभासकाय;
स्वस्ति त्रिलोक-विततैक चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत विस्तृताय।।
द्रव्यस्य शुद्धिमधिगम्ययथानुरूपं; भावस्य शुद्धि मधिकामधिंगतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलंब्यवल्गन्; भूतार्थयज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।

अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम पावनानि, वस्तून्यनूनमखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद्विमलकेवल-बोधवह्नौ; पुण्यं समग्रमहमेकमना जुहोमि।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपेत्।

श्री वृषभो नः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति; स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुन्थुः स्वस्ति; स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति; स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति; स्वस्ति श्री वर्धमानः।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

नित्याप्रकम्पाद्भुत-केवलौघाः स्फुरन्मनः पर्यय शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञानबलप्रबोधाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अंत में पुष्पांजलि क्षेपण करना चाहिए।)

कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं संभिन्न-संश्रोतृ पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।2।।
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादना-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञानबलाद्वहंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः प्रत्येकबुद्धाः दशसर्वपूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्तविज्ञाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।4।।
जंघावलि-श्रेणि-फलाम्बु-तंतु-प्रसून-बीजांकुर चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।5।।
अणिम्नि दक्षाःकुशला महिम्नि, लघिम्निशक्ताः, कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्वलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः।।6।।

सकामरूपित्व-वशित्वमेश्यं प्राकाम्य मंतर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाऽप्रतीघातगुण प्रधानाः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं घोरं तपो घोरपराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोरगुणाश्चरंतः स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥8॥
आमर्षसर्वौषधयस्तथाशीर्विषा विषा दृष्टिविषंविषाश्च।
सखिल्ल-विड्जल्लमल्लौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥9॥
क्षीरं स्रवन्तोऽत्रघृतं स्रवन्तो मधुस्रवंतोऽप्यमृतं स्रवन्तः।
अक्षीणसंवान महानसाश्चं स्वस्ति क्रियासु परमर्षयो नः॥10॥

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) (इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

श्री नवदेवता पूजा

(स्थापना)

हे! लोक पूज्य अरिहंत नमन्, हे! कर्म विनाशक सिद्ध नमन्।
आचार्य देव के चरण नमन्, अरु, उपाध्याय को शत् वन्दन॥
हे! सर्व साधु है तुम्हें नमन्, हे! जिनवाणी माँ तुम्हें नमन्।
शुभ जैन धर्म को करूँ नमन्, जिनबिम्ब जिनालय को वन्दन॥
नव देव जगत! में पूज्य 'विशद', है मंगलमय इनका दर्शन।
नव कोटि शुद्ध हो करते हैं, हम नव देवों का आह्वानन्॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(गीता छन्द)

हम तो अनादि से रोगी हैं, भव बाधा हरने आये हैं।
हे प्रभु अन्तर तम साफ करो, हम प्रासुक जल भर लाये हैं॥

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

संसार ताप में जलकर हमने, अगणित अति दुख पाये हैं।
हम परम सुगंधित चंदन ले, संताप नशाने आये हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती से सारे कर्म धुलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।

यह जग वैभव क्षण भंगुर है, उसको पाकर हम अकुलाए।
अब अक्षय पद के हेतु प्रभू, हम अक्षत चरणों में लाए।
नवकोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अक्षय शांति मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बहु काम व्यथा से घायल हो, भव सागर में गोते खाये।
हे प्रभु! आपके चरणों में, हम सुमन सुकोमल ले आये॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चाकर अनुपम फूल खिलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

हम क्षुधा रोग से अति व्याकुल, होकर के प्रभु अकुलाए हैं।
यह क्षुधा मेटने हेतु चरण, नैवेद्य सुसुन्दर लाए हैं॥
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ती कर सारे रोग टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह तिमिर ने सदियों से, हमको जग में भरमाया है।
उस मोह अन्ध के नाश हेतु, मणिमय शुभ दीप जलाया है॥

नव कोटि शुद्ध नव देवों की, अर्चा कर ज्ञान के दीप जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: महा मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

भव वन में ज्वाला धधक रही, कर्मों के नाथ सतायें हैं।
हों द्रव्य भाव नो कर्म नाश, अग्नि में धूप जलायें हैं।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, पूजा करके वसु कर्म जलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सारे जग के फल खाकर भी, हम तृप्त नहीं हो पाए हैं।
अब मोक्ष महाफल दो स्वामी, हम श्रीफल लेकर आए हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, भक्ति कर हमको मोक्ष मिले।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने संसार सरोवर में, सदियों से गोते खाये हैं।
अक्षय अनर्घ पद पाने को, वसु द्रव्य संजोकर लाये हैं।।
नव कोटि शुद्ध नव देवों की, वन्दन से सारे विघ्न टलें।
हे नाथ! आपके चरणों में, श्रद्धा के पावन सुमन खिलें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

नव देव हमारे जगत सहारे, चरणों देते जल धारा।
मन वच तन ध्याते जिन गुण गाते, मंगलमय हो जग सारा।।

शांतये शांति धारा

ले सुमन मनोहर अंजलि में भर, पुष्पांजलि दे हर्षाएँ।
शिवमग के दाता ज्ञानप्रदाता, नव देवों के गुण गाएँ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्।

जाप्य–ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नम:।

जयमाला

(दोहा) **मंगलमय नव देवता, मंगल करें त्रिकाल।**
मंगलमय मंगल परम, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

अर्हन्तों ने कर्म घातिया, नाश किए भाई।
दर्शन ज्ञान अनन्तवीर्य सुख, प्रभु ने प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सर्वकर्म का नाश किया है, सिद्ध दशा पाई।
अष्टगुणों की सिद्धि पाकर, सिद्ध शिला जाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
पञ्चाचार का पालन करते, गुण छत्तिस पाई।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, जैनाचार्य भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
उपाध्याय है ज्ञान सरोवर, गुण पच्चिस पाई।
रत्नत्रय को पाने वाले, शिक्षा दें भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
ज्ञान ध्यान तप में रत रहते, जैन मुनी भाई।
वीतराग मय जिन शासन की, महिमा दिखलाई।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्रमय, जैन धर्म भाई।
परम अहिंसा की महिमा युत, क्षमा आदि पाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
श्री जिनेन्द्र की ओम् कार मय, वाणी सुखदाई
लोकालोक प्रकाशक कारण, जैनागम भाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
वीतराग जिनबिम्ब मनोहर, भविजन सुखदाई।।
वीतराग अरु जैन धर्म की, महिमा प्रगटाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।

नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...
घंटा तोरण सहित मनोहर, चैत्यालय भाई।
वेदी पर जिन बिम्ब विराजित, जिन महिमा गाई।।
जिनेश्वर पूजों हो भाई।
नव देवों को नव कोटि से, पूजों हो भाई। जि...

(दोहा) **नव देवों को पूजकर, पाऊँ मुक्ती धाम।**
''विशद'' भाव से कर रहे, शत्-शत् बार प्रणाम्।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधु जिन धर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो: पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

भक्ति भाव के साथ, जो पूजें नव देवता।
पावे मुक्ति वास, अजर अमर पद को लहें।।

इत्याशीर्वाद: पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

भक्तामर महिमा

श्री भक्तामर का पाठ, कर्म का काठ
जलावन कारी, भव व्याधी मैटनहारी
अन्तर में मेरे मोह जगा, जन्मादि जरा का रोग लगा
न कोई हमको मिला, जगत उपकारी
भव व्याधी मैटनहारी...1

भक्तामर भक्ति का कारण है, जो भव का रोग निवारण है
यह तीन लोक में गाया, मंगलकारी
भव व्याधी मैटनहारी...2

श्री मानतुंग मुनिवर ज्ञानी, को कैद किए कुछ अज्ञानी
तब आदिनाथ को ध्याए, गुरु अनगारी
भव व्याधी मैटनहारी...3

जो पाठ करे व्रत ध्यान करे, उसका संकट सब पूर्ण हरे
सुखशांति पाता है, पावन व्रतधारी
भव व्याधी मैटनहारी...4

जो ''विशद'' ज्ञान का दाता है, जीवों को अभय प्रदाता है
शाश्वत मुक्ति का, हेतु है शुभकारी
भव व्याधी मैटनहारी...5

भक्तामर विधान पूजा

(स्थापना) (दोहा)

भक्तामर स्तोत्र का, करते हम गुणगान।
आह्वानन करते हृदय, पाने पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, सर्व मंगलकारी धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त सर्व लोकोत्तम धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।

ॐ ह्रीं सर्व कर्म बंधन विमुक्त, जगत् शरण धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितौ भव वषट् सन्निधिकरणं।।

(मोतीयादाम छन्द)

भराया झारी में शुचि नीर, मिटाने को लाए भव पीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा॥1॥

घिसाया चंदन यह गोसीर, मिले अब मुझको भव का तीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

शशि सम तन्दुल लाए जीर, मिले अक्षय पद की तासीर।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

सुगन्धित पुष्पित लाए फूल, काम का रोग होय निर्मूल।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ ग्रं ग्रीं ग्रूं ग्रौं ग्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

बनाये ताजे यह पकवान, मुझे हो समता का रस पान।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ घ्रां घ्रीं घ्रूं घ्रौं घ्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥5॥

किया दीपक से यहाँ प्रकाश, मोह तम का हो सारा नाश।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ झ्रां झ्रीं झ्रूं झ्रौं झ्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥6॥

जलाते धूप अग्नि में आज, नशे कर्मों का सकल समाज।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रौं श्रः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥7॥

चढ़ाते ताजे फल भगवान, मोक्ष फल हमको मिले महान।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ खां खीं खूं खौ खः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा॥8॥

बनाकर अर्घ्य भराया थाल, चढ़ाते भक्ति से नत भाल।
जिनेश्वर आदिनाथ महाराज, पूजते पाने शिव साम्राज्य॥

ॐ अ हाँ सि हीं आ हूँ उ हौं सा हः धर्म प्रवर्तक श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य प्राप्ताय अर्घ्य निर्वपामीति स्वाहा॥9॥

(दोहा) **शांती धारा दे रहे, हो शांती भगवान।**
पूजा का फल प्राप्त हो, हो आतम कल्याण॥

शान्तये शांतिधारा...

पुष्पांजलि करते ''विशद'', लेकर सुरभित फूल।
सुख शांति सौभाग्य हो, कर्म होंय निर्मूल॥

पुष्पाजंलि क्षिपेत...

प्रत्येकार्घ्य

(दोहा) **भक्तामर स्तोत्र के, चढ़ा रहे हम अर्घ्य।**
पुष्पाञ्जलि करते विशद् पाने सुपद अनर्घ्य॥

मण्डलस्योपरि पुष्पाजंलि क्षिपेत

श्री भक्तामर स्तोत्र-प्रत्येकार्घ्य

सर्व विघ्न विनाशक

भक्तामर-प्रणत मौलि-मणि-प्रभाणा-
मुद्योतकं-दलित-पाप-तमो वितानम्।
सम्यक्-प्रणम्य-जिन-पाद-युगं-युगादा-
वालम्बनं-भवजले-पततां-जनानाम्॥1॥

सर्वोपद्रवनाशक-मन्त्र—ॐ ह्रां, ह्रीं, ह्रूं श्रीं क्लीं ब्लूँ, क्रौं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

भक्त चरण में झुकते आके, मुकुट मणि की कांति प्रधान।
पाप तिमिर सब नाशनहारी, दिव्य दिवाकर ज्ञान महान॥
भव समुद्र में पतित जनों को, देते हैं जो आलम्बन।
आदिनाथ के चरण कमल में, करते हम शत् शत् वन्दन॥1॥

ॐ ह्रीं प्रणतदेवसमूह मुकुटाग्रमणिद्योतकाय महापापान्धकार विनाशनाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वहा॥1॥

सकल रोग नाशक

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुर-लोक-नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्-त्रितय-चित्त-हरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्॥2॥

मस्तक-पीड़ा-नाशक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमः स्वाहा।

सकल तत्त्व के ज्ञाता अनुपम, सकल बुद्धि पटु धी धारी।
इन्द्रराज भी स्तुति करता, नत होकर जन मन हारी॥
हैं स्तुत्य प्रथम जिन स्वामी, महिमा हम भी गाते हैं।
जयकारा करते हैं चरणों, सादर शीश झुकाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं गणधर-चारणसमस्त-ऋषीन्द्र-चन्द्रादित्य-सुरेन्द्र-नरेन्द्र-व्यंतरेन्द्र-नागेन्द्र-चतुर्विध मुनीन्द्रस्तुत चरणारविंदाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥2॥

सर्व सिद्धिदायक

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मति-र्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल-संस्थित-मिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्॥3॥

शत्रु-दृष्टि-बन्धक-मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यः सर्वसिद्धिदायकेभ्यः नमः स्वाहा।

मन्द बुद्धि हम स्तुति करते, नहीं जरा भी शर्माते।
विज्ञ जनों से अर्चित हैं प्रभु, ज्ञानी आप कहे जाते॥

जल में चन्द्र बिम्ब की छाया, पाने बालक जिद् करता।
सत्य स्वरूप जानने वाला, ज्ञानी कर्मों से डरता॥3॥

ॐ ह्रीं विगतबुद्धि गर्वापहार सहित श्रीमन्मानतुंगाचार्य भक्तिसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम निर्वपामीति स्वाहा॥3॥

जल जंतु भय मोचक

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशाँक-कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं
को वा तरीतु-मल-मम्बु-निधिं भुजाभ्याम्॥4॥

जलचर अभय प्रदायक-मन्त्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सागरसिद्ध देवताभ्यो नमः स्वाहा।

चन्द्र कांति से बढ़कर हे जिन!, आप धवल कांती पाए।
हे गुण सागर! महिमा गाने, में सुर गुरु भी थक जाए॥
नक्र चक्र मगरादि होवें, प्रलय काल की चले बयार।
कौन भुजाओं से सागर को, कर सकता है बोलो पार॥4॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनगुणसमुद्र चन्द्रकान्तिमणितेजशरीर समस्त-सुरनाथस्तुत श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥4॥

नेत्र रोग संहारक

सोऽहं तथापि तव भक्ति-वशान्मुनीश,
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति-रपि प्रवृत्तः।
प्रीत्यात्म-वीर्य-मवि-चार्य मृगी मृगेन्द्रं
नाभ्येति किं निज-शिशोः परि-पाल-नार्थम्॥5॥

नेत्र रोग निवारक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्व-सर्व-संकट निवारणेभ्यः सुपार्श्व यक्षेभ्यो सहिताय नमो नमः स्वाहा।

शक्ति नहीं भक्ती से प्रेरित, हो स्तुति करने आए।
नाथ आपके दर्शन करके, मन ही मन में हर्षाए॥

निज शिशु की रक्षा हेतू मृगि, अहो विचार कहाँ करती।
जाकर मृगपति के सम्मुख वह, रक्षा कर संकट हरती।।5।।

ॐ ह्रीं समस्तगणधरादि-मुनिवरप्रतिपालक मृगबालवत् श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

सरस्वती भगवती विद्या प्रसारक

अल्पश्रुतं श्रुत-वतां परि-हास-धाम,
त्वद्-भक्ति-रेव मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल-मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निक-रैक-हेतु।।6।।

विद्यादायक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्राँ श्रीं श्रूँ श्रः हं सं थ थ थः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु कुरु स्वाहा।

अल्प ज्ञानी हम ज्ञानी जन से, हास्य कराते हैं इक मात्र।
भक्ति आपकी प्रेरित करती, अतः भक्ति के हैं हम पात्र।।
आम्र वृक्ष पर वौर आए तब, कोयल करे मधुर शुभगान।
नाथ आपकी भक्ति करती, प्रेरित करने को गुणगान।।6।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रचन्द्रभक्ति सर्वसौख्य तुच्छभक्ति बहुसुखदायकाय जिनेन्द्राय जिनादि परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।6।।

सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्-क्षय-मुपैति शरीर-भाजाम्।
आक्रान्त-लोक-मलि-नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्ध कारम्।।7।।

सर्पविष-विनाशक-मन्त्र-ॐ ह्रीं हं सं श्राँ श्रीं क्रौं क्लीं सर्व दुरित-संकट-क्षुदोपद्रवकष्ट निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

स्तुति से हे नाथ! आपकी, कट जाते चिर संचित पाप।
शीघ्र भाग जाते हैं क्षण में, जरा नहीं रहता संताप।।
तीन लोक में भ्रमर सरीखा, तम छाया भारी घन घोर।
पूर्ण नाश हो जाता क्षण में, सूर्योदय होते ही भोर।।7।।

ॐ ह्रीं अनंतभव-पातक सर्व विनाशकाय तवस्तुति सौख्यदायकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।7।।

सर्वारिष्ट योग निवारक

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु
मुक्ता-फल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

सर्वारिष्ट-संहारक-मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय झ्रों झ्रों नमः स्वाहा।

हूँ मतिमान आपकी फिर भी, शुभ स्तुति आरम्भ करी।
चित्त हरण करती जन-जन का, भक्ति आपकी शांति भरी।।
कमल पत्र पर जल कण जैसे, मोती की उपमा पाए।
नाथ! आपकी स्तुति जग में, सज्जन का मन हर्षाए।।8।।

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रस्तवन सत्पुरुष चिच्चमत्काराय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।8।।

(दोहा) **सुर नर नाग नरेन्द्र से, वन्दित जिन भगवान**
अष्ट द्रव्य से पूजते, होय मेरा कल्याण।

ॐ ह्रीं अष्ट दल कमलाधिपतये श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सप्तभय संहारक अभीप्सित फलदायक

आस्तां तव स्तवन-मस्त-समस्त-दोषं,
त्वत्-संकथाऽपि जगतां दुरि-तानि हन्ति।
दूरे सहस्त्र-किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भांजि।।9।।

सप्तभय निवारक मन्त्र-ॐ ह्रीं नमो भगवते जय यक्षाय ह्रीं हूँ नमः स्वाहा।

प्रभु स्तोत्र आपका क्षण में, सारे दोष विनाश करे।
पुण्य कथा भी प्रभू आपकी, जन्म जन्म के पाप हरे।।
सहस रश्मि वाला सूरज ज्यों, गगन में रहता है अतिदूर।
सागर में कमलों को देता, सूर्य प्रभा अपनी भरपूर।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीजिनपूजन-स्तवन-कथाश्रवणेन जगत्त्रभव्यजीव समस्तपापौघविनाशनाय श्री आदि परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।9।।

उन्मत्त कूकर विष निवारक

नात्यद्-भुतं भुवन-भूषण भूतनाथ!,
भूतै-र्गुणै-र्भुवि भवन्त-मभिष्टु-वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्या-श्रितं य इह नात्म समं करोति॥10॥

श्वान विष निवारक-मन्त्र–ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः श्रां श्रीं श्रों श्रः सिद्ध-बुद्ध कृतार्थे भव-भव वषट् संपूर्ण नमः स्वाहा।

त्रिभुवन तिलक आप हो स्वामी, सब जीवों के नाथ कहे।
सद्भक्तों को निज सम करते, इसमें क्या आश्चर्य रहे॥
धनी लोग स्वाश्रित को धन दे, कर लेते हैं स्वयं समान।
नहीं करे तो कौन कहेगा, स्वामी को हे नाथ महान्॥10॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यानुपमगुणमंडित समस्तोपमासहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।10।।

आकर्षक एवं वांछा पूरक

दृष्ट्वा भवन्त-मनि-मेष-विलोक-नीयम्,
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः
क्षारं जलं जल-निधे-रसितुं क इच्छेत्॥11॥

इष्टव्यक्ति आमन्त्रक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्राँ श्रीं कुमति-निवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा।

नाथ! आपका दर्शन करके, भक्त हृदय में होता हर्ष।
और नहीं सन्तोष कहीं है, बिना आपके करके दर्श॥
क्षीर सिन्धु का चन्द्र किरण सम, जो मानव करता जलपान।
कालोदधि का खारा पानी, कौन पियेगा हो अज्ञान॥11॥

ॐ ह्रीं जिनेन्द्रदर्शन अनंतभवसंचित अघसमूहविनाशनाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।11।।

हस्तिमद विदारक वांछित रूप प्रदायक

यैः शान्त-राग-रुचिभिः परमाणु-भिस्त्वं,
निर्मापितस्-त्रिभुवनैक-ललामभूत!।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्याम्,
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति॥12॥

हस्ति-मद मारक-मन्त्र-ॐ आं आं अं अः सर्वराजा प्रजा मोहिनी सर्वजनवयं कुरु कुरु स्वाहा।

हुआ आपके तन का स्वामी, जितने अणुओं से निर्माण।
उतने ही अणु थे धरती पर, शांत रागमय श्रेष्ठ महान॥
हे अद्वितीय शिरोमणि प्रभु, तीन लोक के आभूषण।
नहीं आपसा सुन्दर कोई, नहीं आपसा आकर्षण॥12॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनशान्तिस्वरूपगुण त्रिभुवनतिलकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।12।।

लक्ष्मी सुख प्रदायक स्व शरीर रक्षक

वक्त्रं क्व ते सुर-नरो-रग-नेत्र-हारि,
निःशेष-निर्जित-जगत्-त्रितयोप-मानम्।
बिम्बं कलंक-मलिनं क्व निशा-करस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्॥13॥

संपत्तिदायक, देह-रक्षक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं हँ सः ह्रौं ह्राँ ह्रीं द्राँ द्रीं द्रौं द्रः मोहिनी सर्व जन वयं कुरु कुरु स्वाहा।

सुन्दर अनुपम मुख वाले जिन, सुर नर नाग नेत्रहारी।
तीन लोक की उपमा जीते, हे निर्ग्रन्थ! भेष धारी॥
है कलंक से युक्त चंद्रमा, उस से तुलना कौन करे।
हो पलास सा फीका दिन में, वही चन्द्रमा दीन अरे॥13॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यविजयी रूपातिशय अनंतचन्द्रतेजोजितृ सदातेज-पुंजायमान श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।13।।

आधि-व्याधि नाशक

सम्पूर्ण-मण्डल-शशांक-कला-कलाप,
शुभ्रा गुणास्-त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजग-दीश्वर नाथ-मेकम्,
कस्तान् निवार-यति संचरतो यथेष्टम्॥14॥

आधि-व्याधि-नाशक-मन्त्र-ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी नमः स्वाहा।

कला कलाओं से बढ़के है, पूर्ण चन्द्रमा कांतीमान।
तीन लोक में व्याप रहे हैं, प्रभु के गुण भी पूर्ण महान॥
जिन गुण विचरे तीन लोक में, जगन्नाथ का पा आधार।
कौन रोक सकता है उनको, किसको है इतना अधिकार॥14॥

ॐ ह्रीं शुभ्रगुणातिशय रूप त्रिभुवन जित्जिनेन्द्रगुण विराजमानाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।14।।

सम्मान सौभाग्य संवर्द्धक

चित्रं कि-मत्र यदि ते त्रिदशांग-नाभिर्
नीतं मना-गपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल-मरुता चलिता-चलेन,
किं मन्द-राद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्॥15॥

सम्मान-सौभाग्य-वर्धक-मन्त्र-ॐ नमो भगवती गुणवती महामानसी नमः स्वाहा।

नहीं डिगा पाईं प्रभु का मन, हुई देवियाँ भी लाचार।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, कामदेव ने मानी हार॥
प्रलय काल की वायू चलती, पर्वत भी गिर-गिर जाते।
हिलता नहीं सुमेरू फिर भी, ऐसी अचल शक्ति पाते॥15॥

ॐ ह्रीं मेरुवद्अचल शीलशिरोमणये चतुर्विधवनितावाविकाररहित शीलसमुद्राय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।5।।

सर्व विजय दायक

निर्धूम - वर्ति - रप - वर्जित - तैल - पूरः
कृत्स्नं जगत्-त्रय-मिदं प्रकटी-करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता-चलानाम्,
दीपोऽपरस्तव-मसि नाथ! जगत्-प्रकाशः॥16॥

सर्वविजय-दायक-मन्त्र-ॐ नमः सुमंगला, सुसीमा, नामदेवी, सर्वसमीहितार्थ वज्रश्रृंखलां कुरु कुरु नमः स्वाहा।

धुँआ तेल बाती बिन दीपक, नाथ! आप कहलाते हो।
तीनों लोक प्रकाशित करते, शिव पथ आप दिखाते हो॥
वायू ऐसी तेज चले कि, गिरि शिखर उड़-उड़ जाए।
एक अलौकिक दीप आप हो, कोई नहीं बुझा पाए॥16॥

ॐ ह्रीं धूमस्नेहवर्त्यादिविघ्नरहित त्रैलोक्य परमकेवलदीपकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपपमीति स्वाहा।।16।।

सर्व रोग निरोधक

नास्तं कदाचि - दुप - यासि न राहु - गम्यः
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भो - धरो - दर - निरुद्ध - महा - प्रभावः
सूर्याति-शायि-महि-मासि मुनीन्द्र! लोके॥17॥

सर्व-रोग निरोधक-मन्त्र-ॐ णमो णमिऊण अट्ठे मट्ठे क्षुद्र विघट्ठे क्षुद्रपीड़ां जठरपीड़ां भंजय भंजय सर्वपीड़ां, सर्वरोग-निवारयं कुरु कुरु नमः स्वाहा।

उदय अस्त न होता जिसको, और न राहू ग्रस पाए।
तीनों लोक का ज्ञान आपका, एक साथ सब दिखलाए॥
घने मेघ ढक सकें कभी न, न प्रभाव कम हो पाता।
महिमाशाली दिनकर चरणों, स्वयं आपके झुक जाता॥17॥

ॐ ह्रीं राहुचन्द्रपूजित निरावरणज्योतिरूप लोकालोकित सदोदयाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।17।।

शत्रु शैन्य स्तम्भक

नित्यो-दयं दलित-मोह-महान्ध-कारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारि-दानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कान्ति,
विद्यो-तयज्-जग-दपूर्व-शशाँक-बिम्बम्॥18॥

शत्रु-सैन्य-स्तंभक-मन्त्र-ॐ नमो भगवते शत्रुसैन्यनिवारणाय यं यं यं क्षुर विध्वंसनाय नमः क्लीं ह्रीं नमः।

मोहमहातम के नाशक प्रभु, सदा उदित रहते स्वामी।
राहु गम्य न मेघ से ढकते, हे शिव पथ! के अनुगामी॥
अतुल कांतिमय रूप आपका, मुख मण्डल भी दमक रहा।
जगत शिरोमणि हे शशांक! जिन, तुमसे जग ये चमक रहा॥18॥

ॐ ह्रीं नित्योदयरूप अगम्य राहु त्रिभुवनसर्वकलासहित विराजमानाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥18॥

उच्चाटनादि रोधक

किं शर्वरीषु शशि-नाह्नि विवस्वता वा,
युष्मन्-मुखेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ!।
निष्पन्न-शालि-वन-शालिनी जीव-लोके,
कार्यं कियज्-जलधरै-र्जलभार-नम्रैः॥19॥

उच्चाटनादि रोधक-मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रः य क्ष ह्रीं वषट् नमः स्वाहा।

मुख मण्डल जिन दिव्य तेजमय, अन्धकार का करे विनाश।
दिन में सूर्य और रात्री में, चन्द्र बिम्ब की फिर क्या आस॥
धान्य खेत में पके हुए शुभ, लहराएँ अतिशय अभिराम।
जल से भरे सघन मेघों का, रहा बताओ फिर क्या काम॥19॥

ॐ ह्रीं चन्द्रसूर्योदयास्त रजनी-दिवारहित परमकेवलोदय सदा दीप्तिविराजमानाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥19॥

संतान संपत्ति सौभाग्य प्रसाधक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृताव-काशं,
नैवं तथा हरि-हरादिषु नायकेषु।

तेजः महामणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि॥20॥

संतान-संपत्ति-सौभाग्य-प्रदायक मन्त्र-ॐ नमो भगवते पुत्रार्थ सौख्यं कुरु कुरु ह्रीं नमः स्वाहा।

शोभित होता प्रभु आपका, स्वपर प्रकाशी केवल ज्ञान।
हरिहरादि देवों में वैसा, प्रकट नहीं हो सके प्रधान॥
महारत्न ज्योतिर्मय किरणों, वाला शुभ देखा जाता।
किरणाकुलित काँच क्या वैसी, उत्तम आभा को पाता॥20॥

ॐ ह्रीं हरिहरादिज्ञानरहित परमकेवलज्ञानज्योतिसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥20॥

सर्व सौख्य सौभाग्य साधक

मन्ये वरं हरि-हरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोष-मेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि॥21॥

सर्वसुख, सौभाग्य साधक-मन्त्र-ॐ नमो भगवते शत्रुभ्य निवारकाय नमः स्वाहा।

हरिहरादि देवों का हमनें, माना उत्तम अवलोकन।
नहिं सन्तोष प्राप्त करता है, बिना आपको देखे मन॥
तुम्हें देखने से हे स्वामी!, लाभ हुआ मुझको भारी।
भूला भटका चंचल मेरा, चित्त हुआ है अविकारी॥21॥

ॐ ह्रीं त्रिभुवनमनोमोहन जिनेन्द्ररूपान्यदृष्टान्तरहित परम मंडिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥21॥

भूत पिशाचादि बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्व-दुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्र-रश्मिम्,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम्॥22॥

भूतपिशाच बाधा निरोधक-मन्त्र-ॐ नमो श्री वीरेहिं जृम्भय जृम्भय मोहय मोहय स्तम्भय स्तम्भय अवधारणं कुरु कुरु स्वाहा।

जहाँ सैकड़ों सुत को जनने, वाली सौ-सौ माताएँ।
मगर आपको जनने का, सौभाग्य श्रेष्ठ जननी पाएँ॥
सर्व दिशाएँ नक्षत्रों को, पाती ना कोई खाली।
पूर्ण प्रतापी सूरज को बस, पूर्व दिशा जनने वाली॥22॥

ॐ ह्रीं श्री जिनवरमाताजनित जिनेन्द्रपूर्वदिग्भास्कर केवलज्ञान भास्कराय श्री आदिब्रह्मजिनाय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥22॥

प्रेत-बाधा निवारक

त्वा-मा-मनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः पुरस्तात्।
त्वा-मेव सम्य-गुप-लभ्य जयन्ति मृत्युम्,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः॥23॥

प्रेतबाधा निवारक-मन्त्र-ॐ नमो भगवती जयावती मम समीहितार्थ मोक्षसौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

हे मुनियों के नाथ आपका, परम पुरुष करते गुणगान।
सूर्यकान्त सम तेज वंत हो, मृत्युंजय मेरे भगवान॥
नाथ! आपको छोड़ कोई ना, शिवमारग दिखलाता है।
'विशद' आपको ध्याने वाला, मृत्युंजय हो जाता है॥23॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यपावनादित्यवर्ण परमअष्टोत्तरशतलक्षण नवशत व्यंजनाय समुदाय एकसहस्रअष्टमंडिताय श्री आदिजिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥23॥

शिरोरोग नाशक

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्तय-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माणमीश्वर-मनन्त-मनंग-केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं
ज्ञान-स्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः॥24॥

शिरो रोग नाशक-मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झौं झौं नमः स्वाहा।

आदिब्रह्म ईश्वर जगदीश्वर, एकानेक अनन्त मुनीश।
विजित योग अक्षय मकरध्वज, विमलज्ञान मय हे जगदीश!॥
जगन्नाथ जगतीपति आदिक, कहलाते हो हे वागीश।
इत्यादिक नामों के द्वारा, जाने जाते हे योगीश॥24॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मा-विष्णु-श्रीकंठ-गणपति त्रिभुवनदेवत्वसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥24॥

(दोहा)

सुर नर नाग नरेन्द्र से, वन्दित आदि जिनेश
अष्ट द्रव्य से पूजते, पाने गुण अवशेष

ॐ ह्रीं षोड्शदलकमलाधिपतये श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दृष्टिदोष निरोधक

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिव-मार्ग-विधे-र्विधानाद्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि॥25॥

दृष्टि विष निवारक-मन्त्र-ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः स्वाहा।

केवल ज्ञान बोधि को पाने, वाले आप कहाए बुद्ध।
त्रय लोकों के शोक हरणहर, शंकर आप कहाते शुद्ध॥
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, आप विधाता कहे जिनेश।
धर्म प्रवर्तक हे पुरुषोत्तम, और कौन होंगे अखिलेश॥25॥

ॐ ह्रीं बुद्धशंकरशेषधरब्रह्मानाम् सहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥25॥

अर्द्ध शिर पीड़ा विनाशक

तुभ्यं नमस्-त्रिभुव-नार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।

तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय॥26॥

आधाशीशी पीड़ा निवारक-मन्त्र-ॐ नमो ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूँ ह्रूँ परजन-शान्ति व्यवहारे जयं कुरु कुरु स्वाहा।

तीन लोक के दुख हर्त्ता हे, आदि जिनेश्वर्! तुम्हें नमन्।
भूमण्डल के आभूषण प्रभु, हे परमेश्वर तुम्हें नमन्॥
अखिलेश्वर हे तीन लोक के!, तव पद बारम्बार नमन्।
भव सिन्धू के शोसक अनुपम, भविजीवों का चरण नमन्॥26॥

ॐ ह्रीं अधोलोक-मध्यलोक-ऊर्ध्वलोकत्रय कृताहोरात्रिनमस्कार समस्तार्तरौद्रविनाशक त्रिभुवनेश्वराय भवदधितरणतारणसमर्थाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥26॥

शत्रु उन्मूलक

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणै-रशेषैस्,
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दोषै-रुपात्त-विविधाश्रय-जात-गर्वैः,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपी-क्षितोऽसि॥27॥

शत्रु निवारक-मन्त्र-ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी सहिताय चक्रधारिणी चक्रेणानुकूलं साधय साधय शत्रून् उन्मूलय उन्मूलय स्वाहा।

गुण सारे एकत्रित होकर, तुममें आन समाए हैं।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, आश्रय अन्य न पाए हैं॥
खोटे देवों के आश्रय से, गर्वित होकर रहते दोष।
नहीं आपकी ओर झाँकते, कभी स्वप्न में हे गुणकोष!॥27॥

ॐ ह्रीं श्री परमगुणाश्रितावगुणानाश्रित श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥27॥

सर्व मनोरथ प्रपूरक

उच्चै - रशोक - तरु - संश्रित - मुन्मयूख
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।

स्पष्टोल्लसत्-किरण-मस्त-तमो-वितानं,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्व-वर्ति॥28॥

सर्व मनोरथ पूरक-मन्त्र-ॐ नमो भगवते जय विजय, जृम्भय जृम्भय, मोहय-मोहय, सर्वसिद्धि-सम्पत्ति सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा।

तरु अशोक उन्नत है निर्मल, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
सुन्दर रूप आपका मनहर, तरुवर का आश्रय पाए॥
ऊर्ध्वमुखी किरणें अम्बर में, तम को दूर भगाती हैं।
नीलांचल पर्वत से मानो, भव्य आरती गाती हैं॥28॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥28॥

नेत्र पीड़ा विनाशक

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनका-वदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशु-लता-वितानम्,
तुंगो-दयाद्रि-शिर-सीव सहस्त्र-रश्मेः॥29॥

नेत्रपीड़ा निवारक-मन्त्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर-तवाणं झौं झौं नमोः स्वाहा।

रंग बिरंगी किरणों वाला, सिंहासन अद्भुत छविमान।
उस पर कंचन काया वाले, शोभा पाते हैं भगवान॥
उच्च शिखर से उदयाचल के, सूर्य रश्मियाँ बिखराए॥
किरण जाल का श्रेष्ठ चँदोवा, मानो आभा फैलाए॥29॥

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा॥29॥

शत्रु स्तंम्भक

कुन्दा - वदात - चल - चामर - चारु - शोभम्,
विभ्राजते तव वपुः कल-धौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार
मुच्चैस्तटं-सुरगिरे-रिव शात-कौम्भम्॥30॥

शत्रु स्तम्भन कारकमन्त्र-ॐ नमो अट्ठे मट्ठे क्षुद्रान् स्तम्भय स्तम्भय रक्षां कुरु कुरु स्वाहा।

शुभ्र चँवर ढुरते हैं अनुपम, कुन्द पुष्प सम आभावान।
दिव्य देह शोभा पाती है, स्वर्णाभासी कांतीमान॥
कनकाचल के उच्च शिखर से, मानों झरना झरता है॥
अपनी शुभ्र प्रभा के द्वारा, मन मधुकर को हरता है॥30॥

ॐ ह्रीं श्री चतु:षष्ठिचामर प्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।30।।

राज्य सम्मान दायक

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक-कान्त-
मुच्चैः स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल-प्रकर-जाल-विवृद्ध-शोभम्,
प्रख्या-पयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम्॥31॥

राज सम्मान दायक-मन्त्र-ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण परक्कमाणं झौं झौं नमः स्वाहा।

चन्द्र कांति सम छत्र त्रय हैं, मणिमुक्ता वाले अभिराम।
सिर पर शोभित होते अनुपम, अतिशय दीप्तीमान ललाम॥
सूर्य रश्मियों का प्रताप जो, रोक रहे होके छविमान।
तीन लोक के ईश्वर अनुपम, कहे गये हो आप महान॥31॥

ॐ ह्रीं श्री छत्रत्रयप्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्व. स्वाहा।।31।।

संग्रहणी संहारक

गम्भीर - तार - रव - पूरित - दिग्विभागस्
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी॥32॥

संग्रहणी, उदरपीड़ानिवारक-मन्त्र-ॐ नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः सर्व-दोष-निवारणं कुरु कुरु स्वाहा।

उच्च स्वरों में बजने वाली, करती सर्व दिशा में नाद।
तीन लोकवर्ति जीवों के, मन में लाती है आह्लाद॥
डंका पीट रही है अनुपम, हो सद्धर्म की जय-जयकार।
गगन मध्य भेरी बजती है, यश गाती है अपरम्पार॥32॥

ॐ ह्रीं अष्टादशकोटिवादित्र प्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादि-परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।32।।

सर्व ज्वर संहारक

मन्दार - सुन्दर - नमेरु - सुपारि - जात
सन्तान-कादि-कुसुमोत्कर-वृष्टि-रुद्धा।
गन्धोद-बिन्दु-शुभ-मन्द-मरुत्-प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा॥33॥

सर्वज्वर-संहारक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ध्यान-सिद्धिं परमयोगिश्वराय नमो नमः स्वाहा।

गंधोदक की वृष्टी करते, देव चलाते मंद पवन।
संतानक मंदार नमेरू, कल्पतरू के श्रेष्ठ सुमन॥
सुन्दर पारिजात आदिक के, ऊर्ध्वमुखी होकर गिरते।
पंक्तीबद्ध आदि जिनके ही, मानो दिव्य वचन खिरते॥33॥

ॐ ह्रीं समस्त पुष्पजातिवृष्टिप्रातिहार्यसहिताय श्रीपरमादि-परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।33।।

गर्भ संरक्षक

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि-विभा-विभोस्ते,
लोक-त्रये द्युतिमतां द्युति-मा-क्षिपन्ती।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्॥34॥

गर्भ संरक्षक-मन्त्र-ॐ नमो ह्रीं श्रीं ऐं ह्रौं पद्मावति देव्यै सहिताय नमो नमः स्वाहा।

तीन लोकवर्ती उपमाएँ, जो कहने में आती हैं।
तन भामण्डल के आगे वह, सब फीकी पड़ जाती हैं॥

कोटि सूर्य सम प्रखर दीप्ति है, फिर भी नहीं जरा आताप।
शीतल चन्द्र प्रभु के आगे, प्रभाहीन हों अपने आप॥34॥

ॐ ह्रीं श्री कोटिभास्करप्रभामण्डित भामण्डलप्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥34॥

ईति भीति निवारक

स्वर्गा - पवर्ग - गम - मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म - तत्त्व - कथनैक - पटुस् - त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि-र्भवति ते विशदार्थ-सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः॥35॥

ईति भीति विनाशक-मन्त्र-ॐ नमो जय विजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी-अमृतवर्षिणी अमृतं भव भव वषट् सुधायै स्वाहा।

स्वर्ग मोक्ष के दिग्दर्शक हैं, हे जिनेन्द्र तव दिव्य वचन।
तीन लोक में सत्य धर्म को, प्रगटाएँ सम्यक् दर्शन॥
दिव्य देशना सुनकर करते, भव्य जीव अपना उद्धार।
सुनकर विशद समझ लेते हैं, निज निज भाषा के अनुसार॥35॥

ॐ ह्रीं जलधरपटल गर्जित ध्वनियोजनप्रमाणप्रातिहार्यसहिताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥35॥

लक्ष्मी प्रदायक

उन्निद्र - हेमनव - पंकज - पुंज - कान्ति,
पर्युल् - लसन् - नख - मयूख शिखाभि -रामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परि - कल्प - यन्ति॥36॥

लक्ष्मी प्रदायक-मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्डदण्ड स्वामिन् आगच्छ 2। आत्ममंत्रान् आकर्षय आकर्षय आत्म मंत्रान् रक्ष रक्ष परमंत्रान् छिन्दछिन्द मम हितं कुरु कुरु स्वाहा।

चरणाम्बुज नख शोभित होते, नभ में जैसे स्वर्ण कमल।
कुमुद मुदित होकर सागर में, शोभा पाते चरण युगल॥

अभिवन्दन के योग्य चरण शुभ, प्रभुवर जहाँ-जहाँ धरते।
उनके पग तल दिव्य कमल की, देव श्रेष्ठ रचना करते॥36॥

ॐ ह्रीं हेमकमलोपरिकृतगमन देवकृतातिशयसहिताय श्रीआदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥36॥

दुष्टता प्रतिरोध

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्-जिनेन्द्र!
धर्मोप-देशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि॥37॥

दुष्टता प्रतिरोधक मन्त्र-ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूँ ॐ ह्रीं मनोवाँछित सिद्धयै नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

धर्म देशना की बेला में, वैभव पाते जो तीर्थेश।
अन्य कुदेवों में वैसा कुछ, देखा गया नहीं लवलेश॥
घोर तिमिर का नाशक रवि जो, दिव्य रोशनी को पाता।
वैसा दिव्य प्रकाश नक्षत्रों, में भी क्या देखा जाता॥37॥

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवसरणविभूतिमण्डितायविराजमानाय क्लीं श्री परमादिपरमेश्वराय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हस्तिमद-भंजक तथा वैभव वर्द्धक

श्च्योतन् - मदाविल - विलोल - कपोल - मूल-
मत्त - भ्रमद् - भ्रमद् - नादिविवृद्ध - कोपम्।
ऐरा - वताभ - मिभ - मुद्धत - मा - पतन्तं
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव-दाश्रितानाम्॥38॥

हस्तिमद निवारक मन्त्र-ॐ ह्रीं शत्रुविजयारणारणाग्रे ग्रां ग्रीं ग्रूं ग्रः नमो नमः स्वाहा।

महामत्त गज के गालों से, बहे निरन्तर मद की धार।
जिस पर भौंरों का समूह भी, करता हो अतिशय गुंजार॥
क्रोधाशक्त दौड़ता हाथी, जिसका रूप दिखे विकराल।
कभी नहीं कर सकता है प्रभु, तव भक्तों को वह बेहाल॥38॥

ॐ ह्रीं हस्त्यादि गर्व दुर्द्धरभय निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिंह शक्ति संहारक

भिन्नेभ - कुम्भ - गल - दुज्ज्वल - शोणिताक्त,
मुक्ताफल - प्रकर - भूषित - भूमिभागः।
बद्ध-क्रम क्रम-गतं हरिणा - धिपोऽपि,
नाक्रामति क्रम - युगा - चल - संश्रितं ते॥39॥

सिंह शक्ति निवारक-मन्त्र-नमो एषु वृतेषु वर्द्धमान तव भयहरं वृत्ति वर्णायेषु मंत्रः पुनः स्मर्तव्या अतो नापरमंत्र निवेदनाय नमः स्वाहा।

तीक्ष्ण नखों से फाड़ दिए हैं, गज के उन्नत गण्डस्थल।
गज मुक्ताओं द्वारा जिसने, पाट दिया हो अवनीतल॥
ऐसा सिंह भयानक होकर, कभी नहीं कर सकता वार।
चरण कमल का प्रभु आपके, जिसने बना लिया आधार॥39॥

ॐ ह्रीं आदिदेव प्रसादान्महासिंहभयविनाशकाय श्रीयुगादिदेव- परमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥39॥

सर्वाग्नि शामक

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पम्,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्॥40॥

अग्नि शामक मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्राँ ह्रीं अग्निमुपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

प्रलयंकारी आँधी उठकर, फैल रही हो चारों ओर।
उठे फुलिंगे अंगारों की, वायू का भी होवे जोर॥
भुवनत्रय का भक्षण करले, आग सामने आती है।
प्रभू नाम के मंत्र नीर से, क्षण भर में बुझ जाती है॥40॥

ॐ ह्रीं श्री विश्वभक्षणसमर्थ महावह्निविनाशकाय जिननामजलाय श्री आदिब्रह्मणे अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥40॥

भुजंग भय भंजक

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मा-पतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्-
त्वन्नाम-नाग-दमनी-हृदि यस्य पुंसः॥41॥

भुजंग भय निवारक-मन्त्र-ॐ ह्रीं आदिदेवाय ह्रीं नमः स्वाहा।

क्रोधित कोकिल कण्ठ के जैसा, फण फैलाए काला नाग।
लाल नेत्र कर दौड़ रहा हो, मुख से निकल रहा हो झाग॥
ऐसे नाग के सिर पर चढ़कर, भी आगे बढ़ जाता है।
नाम जाप करने वाले का, नाग न कुछ कर पाता है॥41॥

ॐ ह्रीं रक्तनयन सर्प जिननामनागदमन्यौषधये समस्तभय- विनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥41॥

युद्ध भय विनाशक

वल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखा-पविद्धं,
त्वत्-कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति॥42॥

सर्व युद्धभयविनाशक मन्त्र-ॐ नमो णमिऊण विषधर विष प्रणाषन-रोग-शोक-दोषग्रह कप्दुमच्च जायई सुहनाम ग्रहण सकल सुहृदे ॐ नमः स्वाहा।

जहाँ अश्व गज गर्वित होकर, गरज रहे हों चारों ओर।
बलशाली राजा की सेना, चीत्कार करती हो घोर॥
शक्तिहीन नर वहाँ अकेला, जपने वाला प्रभु का नाम।
बलशाली सेना को भी वह, नष्ट करे क्षण में अविराम॥42॥

ॐ ह्रीं महासंग्रामभयविनाशकाय सर्वांगरक्षणकराय श्री प्रथम-जिनेन्द्राय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा॥42॥

सर्वशान्ति दायक

कुन्ताग्र-भिन्न-गज-शोणित-वारि-वाह-
वेगा - वतार - तरणा - तुर - योध - भीमे।

युद्धे जयं विजित-दुर्जय-जेय-पक्षास्-
त्वत्पाद-पंकज-वना-श्रयिणो लभन्ते।।43।।

सर्वशान्ति दायक मन्त्र-ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी चक्रधारीदेवी चक्रधारिणी जिन-शासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रव विनाशिनी धर्मशान्तिकारिणी नमः शान्ति कुरु कुरु स्वाहा।

बर्छी भालों से आहत गज, तन से बहे रक्त की धार।
योद्धा लड़ने को तत्पर हों, लहू की सरिता करके पार।।
समरांगण में भक्त आपका, शत्रु सैन्य से पाए न हार।
आश्रय पाये जो तव पद का, पाए विजय श्री उपहार।।43।।

ॐ ह्रीं महारिपुयुद्धे जय-विजयप्राप्तकाय श्री आदिवृषभेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।43।।

सर्वापत्ति विनाशक

अम्भो-निधौ क्षुभित-भीषण-नक्र-चक्र-
पाठीन-पीठ-भय-दोल्वण-वाड-वाग्नौ।
रंग-तरंग-शिखर-स्थित-यान-पात्रास्-
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

सर्वविपत्ति निवारक-मन्त्र-ॐ नमो रावणाय विभीषणाय कुम्भकरणाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय सहिताय मनश्चिन्तितं कुरु कुरु स्वाहा।

लहरें क्षोभित हों सिन्धु की, शिखर से जाकर टकराएँ।
नक्र चक्र धड़ियाल भयंकर, बड़वानल भी जल जाए।।
सागर में तूफान विकट हो, फँसा हुआ जिसमें जलयान।
छुटकारा पा जाए क्षण में, करे आपका जो भी ध्यान।।44।।

ॐ ह्रीं महासमुद्रचलितवात महादुर्जयभयविनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।44।।

जलोदरादि रोग एवं सर्वापत्ति विनाशक

उद्भूत - भीषण - जलोदर - भार - भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुप-गताश्च्युत-जीवि-ताशाः।

त्वत् - पाद - पंकज - रजोऽमृत - दिग्ध - देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज-तुल्य-रूपाः।।45।।

जलोदर रोग निवारक-मन्त्र-ॐ नमो भगवती क्षुद्रोपद्रवशान्ति कारिणी सहिताय रोगकष्टज्वरोपशमनं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा।

भीषण रोगों से पीड़ित हो, और जलोदर का हो भार।
जीवन की आशा तज दी हो, भय से आकुल होय अपार।।
तव पद पंकज की रज पाकर, तन की मिट जाए सब पीर।
कामदेव के जैसा सुन्दर, भक्त आपका पाए शरीर।।45।।

ॐ ह्रीं दशताप-जलंधराष्टादश-कुष्टसन्निपातमहारोगविनाशकाय परमकामदेवरूपलक्ष्मीदायकादि जिनेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।45।।

बंधन विमोचक

आपादकण्ठ-मुरु-श्रृंखल-वेष्टितांगा,
गाढ़ं बृहन्-निगड-कोटि-निघृष्ट-जंघाः।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजाः स्मरन्तः,
सद्यः स्वयं विगत-बन्ध-भय भवन्ति।।46।।

कारागार मुक्तिदायक-मन्त्र-ॐ नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः ठः ठः जः जः क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षः क्षयः स्वाहा।

पग से सिर तक जंजीरों से, जकड़ी हुई है जिसकी देह।
छिले हुए घुटने जंघाएँ, पीड़ाकारी निःसन्देह।।
ऐसे दुस्तर बन्दीजन भी, करके प्रभुनाम का जाप।
कट जाते हैं बन्धन सारे, उनके क्षण में अपने आप।।46।।

ॐ ह्रीं महाबंधन आपादकंठपर्यन्त बैरीकृतोपद्रवभयविघाताय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।46।।

अस्त्र शस्त्रादि निरोधक

मत्त - द्विपेन्द्र - मृगराज - दवान - लाहि-
संग्राम - वारिधि - महोदर - बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश-मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमा-नधीते।।47।।

अस्त्रशस्त्रादि निरोधक-मन्त्र-ॐ नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः य क्ष श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

सिंह गजेन्द्र नाग रणस्थल, दावानल हो रोग अपार।
सिंधू भय अतिभीषण दुख से, क्षण भर में पा जाए पार।।
गुण स्तवन वन्दन करता है, विश्वेश्वर का जो धीमान।
भय भी भय से आकुल होकर, करता है उसका सम्मान।।47।।

ॐ ह्रीं सिंह-गजेन्द्रराक्षसभूतपिशाचशाकिनीरिपु परमोपद्रवविनाशकाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।47।।

सर्व सिद्धि दायक

स्तो-त्रस्त्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै र्निबद्धां,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गता-मजस्त्रं,
तं ''मानतुंग''-मवशा समुपैति लक्ष्मीः।।48।।

सर्वसिद्धिदायक-मन्त्र-ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा झौं झौं नमः स्वाहा।

गुण उपवन से प्रभू आपके, भांति-भांति वर्णों के फूल।
चुनकर लाए भक्ति माल को, गूँथे हैं रुचि के अनुकूल।।
भव्य जीव जो सुमनावलि से, अपना कण्ठ सजाते हैं।
'मानतुंग' सम गुण के सागर, 'विशद' मुक्ति पद पाते हैं।।48।।

ॐ ह्रीं पठन-पाठन श्रोतव्य श्रद्धावनत मानतुंगाचार्यादि समस्तजीव कल्याणदाय श्री आदिपरमेश्वराय अर्घ्यम् निर्वपामीति स्वाहा।।48।।

(दोहा)

सुर नर नाग नरेन्द्र से, वन्दित आदीनाथ
अष्ट द्रव्य से पूजते, झुका रहे पद माथ।।3।।

ॐ ह्रीं चतुर्विंशति दल कमलाधिपते श्री वृषभनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

ऋद्धियों के अर्घ्य

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीजबुद्धीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदाराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयंबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहियबुद्धाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजुमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउलमदीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदसपुव्वीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठांगमहानिमित्तकुशलाणं अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वइड्ढिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामिणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्ततवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरपराक्कमाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणबंभयारीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विप्पोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहिपत्ताणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मणबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचिबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कायबलीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पिसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुरसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमियसवीणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीणमहाणसाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो भयवदो-महदि-महावीर वड्ढमाण बुद्ध ऋषि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इसके पश्चात् इस मंत्र की एक माला फेरें और धूप से आहुति देवें।

जाप–ॐ ह्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः।

जयमाला

दोहा– **भक्तामर स्तोत्र की, महिमा अगम अपार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव का द्वार॥

चौपाई

प्रथम जिनेश्वर मंगलकारी, आदिनाथ की महिमा न्यारी।
धर्म प्रवर्तन करने वाले, तीर्थंकर जिन हुए निराले॥
आप हुये संयम के धारी, विशद ज्ञान पाए अनगारी।
जग के प्राणी तुमको ध्याते, सुख शांती सौभाग्य जगाते॥

भक्तामर स्तोत्र निराला, सुख शांती शुभ देने वाला।
पार नहीं महिमा का भाई, तीन लोक में है सुखदायी॥
मानतुंग मुनिवर जी गाए, आदिनाथ को मन से ध्याये।
संकट दूर हुआ तब भाई, यह स्तोत्र की महिमा गाई॥
भाव सहित जो भी जन ध्याते, उनके सब संकट कट जाते।
पूजा कोई करे शुभकारी, कोई पाठ पढ़े मनहारी॥
जो भी श्रद्धा भाव से ध्याए, मन में उत्तम शांती पाए।
भक्त की भक्ति जाए न खाली, जो सौभाग्य बढ़ाने वाली॥
अक्षर इक इक मंत्र बताया, कोई जान सके न माया।
बृहस्पति भी यदि गुण गावे, तो भी पूरा न कह पावे॥
महिमा सुनकर हम भी आए, श्रद्धा सुमन साथ में लाए।
हम हैं प्रभु अज्ञानी प्राणी, प्रभू आप हो केवल ज्ञानी॥
तुमने जीव जगत के तारे, तुमसे कर्म शत्रु भी हारे।
शिव पद दाता आप कहाए, शिवपुर में प्रभु धाम बनाए॥
भक्त आपको मन से ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।
इच्छित फल वह प्राणी पाते, अपने वह सौभाग्य जगाते॥
तुम हो सर्व चराचर ज्ञाता, भवि जीवों के भाग्य विधाता।
पड़ी भँवर में मेरी नैय्या, उसके स्वामी आप खिवैय्या॥
''विशद'' भाव से तुमको ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते।
जग के सारे कष्ट मिटाते, शिव पद हमको शीघ्र दिलाते॥

दोहा– **आदिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम माथ।**
जब तक मुक्ती न मिले, देना भव-भव साथ॥

ॐ ह्रीं सर्वकर्म बन्धन विमुक्त सर्व लोकोत्तम जगत शरण श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **दास खड़ा है चरण में, सुन लो नाथ पुकार।**
जैसा प्रभु निज का किया, करो मेरा उद्धार॥

इत्याशीर्वादः

आरती भक्तामर की

गाएँ जी गाएँ भक्तामर की, आरती मंगल गाएँ।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।
जिनवर के चरणों में नमन् प्रभुवर के चरणों में नमन्।
कृत युग के आदी में प्रभु जी, स्वर्ग से चयकर आए।
नाभिराय अरु मरुदेवी का, जीवन धन्य बनाए।।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, नर नारी हर्षाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।1।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्
असि मसि कृषि वाणिज्य कला अरु, शिल्प का ज्ञान सिखाए।
नील परी की मृत्यु लखकर, प्रभु वैराग्य जगाए।।
विशद ज्ञान को पाए प्रभु जी, घाती कर्म नशाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।2।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्
मानतुंग स्वामी के ऊपर, उपसर्ग भोज ने ढाया।
अड़तालिस तालों के अन्दर, मुनि को कैद कराया।।
टूट गईं जंजीरें ताले, आदि प्रभु को ध्याए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।3।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्
अतिशय देखा भोजराज ने, मुनि को शीश झुकाया।
जैन धर्म के जयकारों से, सारा गगन गुंजाया।।
आदिनाथ प्रभु का आराधन, भव से मुक्ति दिलाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।4।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्
कोड़ा-कोड़ी वर्ष बाद भी, प्राणी तुमको ध्याते।
आदिनाथ जिन भक्तामर को, सादर शीश झुकाते।।
''विशद'' भक्ति की महिमा को यह, सारा ही जग गाए।
घृत के दीप जलाकर प्रभु के, चरणों शीश झुकाएँ।।5।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्

श्री भक्तामर चालीसा

दोहा– भक्तामर स्तोत्र यह, आदिनाथ के नाम।
मानतुंग मुनि ने लिखा, करके चरण प्रणाम।।
सुख शांति सौभाग्य हो, पढ़ने से स्तोत्र।
बाधाएँ सब दूर हों, बहे धर्म का स्रोत।।

चौपाई

भक्तामर स्तोत्र निराला, सब कष्टों को हरने वाला।
आदिनाथ को मन से ध्याए, सच्चे मन से ध्यान लगाए।।
भक्ती के रस में खो जाए, पढ़ने वाला पुण्य कमाए।
मानतुंग की रचना प्यारी, कहलाए जो संकटहारी।।
पढ़े पढ़ाये पाठ कराये, प्राणी पुण्यवान हो जाए।
ग्रह क्लेश सारा नश जाए, मन में अनुपम शांती पाए।।
हरेक काव्य है महिमाशाली, भक्ती कभी न जाए खाली।
एक एक अक्षर मंत्र कहाये, पाठक सुख सम्पत्ति पाए।।
सदी ग्यारहवी जानो भाई, उज्जैनी नगरी सुखदायी।
जिसका प्रान्त मालवा गाया, विद्वानों का केन्द्र बताया।।
राजाभोज वहाँ का जानो, नौ मंत्री जिसके पहिचानो।
कालीदास प्रथम कहलाया, सेठ सुदत्त वहाँ जब आया।।
पुत्र मनोहर जिसका जानो, पुस्तक हाथ लिए था मानो।
राजा ने पूछा हे भाई, पुस्तक कौन सी तुमने पाई।।
नाम माला तब नाम बताए, लेखक कवि धनंजय गाए।
कवि को राजा ने बुलवाया, खुश होके सम्मान कराया।।
कृति नाम माला है प्यारी, राजा किए प्रशंसा भारी।
गुरु के आशिष से यह पाया, मानतुंग को गुरु बतलाया।।
कालीदास को नहीं सुहाया, कविवर को मूरख बतलाया।
शास्त्रार्थ कर ले तो जानें, हम इसकी महिमा पहिचानें।।
दूत मुनि के पास भिजाया, मुनिवर को संदेश सुनाया।
सभा बीच मुनिवर न आए, चार बार संदेश भिजाए।।

कालिदास को गुस्सा आया, उसने राजा को भड़काया।
क्रोध नृपति के मन में आया, सैनिक को आदेश सुनाया।।
बन्दी बना यहाँ पर लाओ, राजसभा में पेश कराओ।
दूत उठाकर मुनि को लाए, मुनि उपसर्ग मानकर आए।।
मौन धार लीन्हे तब स्वामी, जैन धर्म के शुभ अनुगामी।
मुनिवर को वह कैद कराए, अड़तालिस ताले लगवाए।।
नर नारी तब शोक मनाए, दुख के आँसू खूब बहाए।
मुनिवर मन में समता लाए, तीन दिनों का समय बिताए।।
आदिनाथ को मुनिवर ध्याये, भक्तामर स्तोत्र रचाये।
मुनि के तन में बंधने वाले, टूट गयीं जंजीरे ताले।।
आपों आप खुले सब द्वारे, द्वारपाल सब लगा के हारे।
पास में राजा के वह आए, जाकर सारा हाल सुनाए।।
राजा तभी वहाँ पर आया, मुनिवर को फिर कैद कराया।
मुनिवर जी फिर ध्यान लगाए, ताले फिर से टूटे पाए।।
राजा तब मन में घबराया, कालिदास को पास बुलाया।
कालिदास ने शक्ति लगाई, देवी कालिका भी प्रगटाई।।
देवी चक्रेश्वरी तब आई, देख कालिका तब घबराई।
महिमा जैन धर्म की गाई, सबने तब जयकार लगाई।।
जैन धर्म लोगों ने धारा, धर्म का है बश यही सहारा।
''विशद'' भक्ति की है बलिहारी, पुण्यवान होवे शुभकारी।।
भाव सहित भक्तामर गाएँ, मानतुंग सम भक्ति जगाएँ।
अतिशयकारी पुण्य कमाएँ, अनुक्रम से फिर मुक्ती पाएँ।।

(दोहा)

भक्तामर स्तोत्र से, भारी अतिशय होय।
नाना भाषा में रचा, पढ़े भाव से कोय।।
आधि व्याधि नाशक कहा, चालीसा स्तोत्र।
मंत्रो से परिपूर्ण है, 'विशद' धर्म का स्रोत।।

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ऐम् अर्हं श्री वृषभनाथ तीर्थंकराय नमः

आचार्य विशदसागरजी पूजन

(स्थापना)

वीर प्रभु के अनुयायी तुम, विशद सिंधु आचार्य प्रवर।
विराग सिंधु से दीक्षा पाए, हम सबके तुम हो गुरुवर।
इन गुरु शिष्य की गरिमा से यह, हर्षाया सारा अंबर।
परम पूज्य गुरुवर का अनुपम, जयकारा गूंजा घर-घर।
हे गुरुवर! मम हृदय विराजो, अभिलाषा यह है मेरी।
पुष्पों की अंजलि भरकर के, करें स्थापना हम तेरी।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वानन्

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

गंगा में डुबकी लगा-लगा, अपने को पावन बतलाया।
अब कर्म कलंक मिटाने को, गुरु चरणों में जल ले आया।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुवर की पूजा से सचमुच, हृदय कली मम् खिल जाती।
चन्दन से पूजा भवाताप को, दूर हटा सुख दिलवाती।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय संसार ताप विध्वंशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद की प्राप्ति हेतु शुभ, जहाँ से गुरु के कदम बढ़े।
उस जनम क्षेत्र के कण-कण को, मेरे यह अक्षत पुंज चढ़े।।

आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

बागों से चुन-चुनकर सुरभित, पुष्पों के थाल सजाए हैं।
निज काम बाण विध्वंस हेतु, गुरुचरण शरण में आए हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मोदक फेनी घेवर आदिक, यह शुभ पकवान बना लाए।
अब निज की क्षुधा मिटाने को, नैवेद्य चढ़ाने को आये।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हम रत्न जड़ित घृत के दीपक, यह चरण शरण में लाये हैं।
मिट जाये अब अज्ञान तिमिर, गुरु चरणों में हम आये हैं।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोहान्धकार विध्वंशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूपदान में धूप जलाएँ, दश दिश धूम उड़े भारी।
बहु जनम-जनम के संचित भी, कर्मों की पूर्ण जले क्यारी।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ मोक्ष सुफल की चाह में गुरु ने, नग्न दिगम्बर व्रत पाया।
प्रभुवर के बनकर लघुनन्दन, शुभ मोक्ष मार्ग को अपनाया।।

आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलम् निर्वपामीति स्वाहा।

यह अष्टद्रव्य की सामग्री, मेरी पूजा का साधन है।
गुरु भक्ति हम कर सकते बस, दुर्गति का सहज निवारण है।।
आचार्य प्रवर गुरु विशद सिन्धु की, नितप्रति पूजा करते हैं।
जग के पूजक पुण्याश्रव कर, श्रेष्ठ सम्पदा वरते हैं।।
ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– **विशद गुरु की भक्ति ही, मम जीवन आधार।**
युगों-युगों तक हम नहीं, भूलेंगे उपकार।।

(चौपाई)

जयवंतों गुरुदेव हमारे, हैं अनंत उपकार तुम्हारे।
जिन शासन के आप सितारे, जग में रहते जग से न्यारे।।
ग्राम कुपी जग में अलबेला, नाथूराम घर लगा था मेला।
मां इंदर के प्यारे नंदा, अपने घर के तुम हो चंदा।।
नाम रमेश आपका गाया, भवि जीवों के मन को भाया।
आप गये गुरुवर के द्वारे, छोड़ के जग के सभी सहारे।।
बचपन से ही तुमने पाया, महामंत्र नवकार को ध्याया।
तप्त स्वर्ण सम तन है न्यारा, दर्शन से मिटता संसारा।।
श्रद्धा से फिर शीश झुकाया, विराग सिन्धु को गुरु बनाया।
सन् छियानवे में दीक्षा पाई, आप बने फिर शिव के राही।।
धन्य द्रोणगिरि कीन्हें गलियाँ, खिलीं त्याग संयम की कलियाँ।
दृढ़ता से संयम को पाले, जिन आगम के हो रखवाले।।
मालपुरा में टोंक जिला है, गुरुवर का सौभाग्य जगा है।
बसंत पंचमी का दिन पाये, विशदसिन्धु आचार्य बनाये।।
परमेष्ठी आचार्य कहाए, भरत सिन्धुजी गुरुवर पाये।

तीन गुप्ति द्वादश तप धारे, क्षमा आदि दश धर्म संवारे॥
पंचाचार आपने धारे, षट् आवश्यक पालन हारे।
छत्तिस मूल गुणों के धारी, सारा जग पद में बलिहारी॥
पद से अति निस्पृह रहते हैं, जो करते हैं वह कहते हैं।
गुरुकृपा के पंख जो पाते, साधक ध्यान गगन में जाते॥
गुरुवर ही तकदीर संवारे, हारे को बन जायें सहारे।
कई विधान तुमने रच डाले, भक्त जनों के किये हवाले॥
गुरु के सम्मुख सूरज फीका, लगता है चंदा भी नीचा।
दुर्लभ वस्तु सुलभ हो जाती, गुरू कृपा जब रंग दिखाती॥
हम धरते हैं ध्यान तुम्हारा, जानो सब मन्तव्य हमारा।
सर्व समन्दर स्याही घोलूँ, गुरु गुण को मैं कैसे बोलूँ॥
स्वर्ग सुखों की चाह नहीं है, निज दुख की परवाह नहीं है।
गुरु की भक्ति जो भी करते, कोष पुण्य से वो हैं भरते॥

दोहा– मेरे मन की आस है, सपना हो साकार।
मुक्ती के राही बनें, शिवपुर में हो वास॥

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अनर्घ पद प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहोभाग्य है मेरा गुरूवर, दर्श करें दो नयनों से।
विशद गुरु का गुण गाएँ हम, तन से मन से वचनों से॥

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे उत्तर प्रदेश प्रान्ते सूर्यनगर (गाजियाबाद) स्थित 1008 श्री शांतिनाथ दि. जैन मंदिर मध्ये अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2538 वि. सं. 2068 मासोत्तम मासे पौष मासे शुक्लपक्षे बारसतिथि दिन शुक्रवासरे श्री भक्तामर मण्डल विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः–माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता॥
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया॥
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा॥
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे॥
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे॥
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय॥

रचयिता : **श्रीमती इन्दुमती गुप्ता**, श्योपुर

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभु महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी 1008 श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण महामण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक महामण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह-1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. विशद पञ्चागम संग्रह
87. जिन गुरु भक्ति संग्रह
88. धर्म की दस लहरें
89. स्तुति स्त्रोत संग्रह
90. विराग वंदन
91. बिन खिले मुरझा गए
92. जिंदगी क्या है
93. धर्म प्रवाह
94. भक्ति के फूल
95. विशद श्रमण चर्या
96. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
97. इष्टोपदेश चौपाई
98. द्रव्य संग्रह चौपाई
99. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
100. समाधितन्त्र चौपाई
101. शुभषितरत्नावली
102. संस्कार विज्ञान
103. बाल विज्ञान भाग-3
104. नैतिक शिक्षा भाग-1, 2, 3
105. विशद स्तोत्र संग्रह
106. भगवती आराधना
107. चिंतवन सरोवर भाग-1
108. चिंतवन सरोवर भाग-2
109. जीवन की मन:स्थितियाँ
110. आराध्य अर्चना
111. आराधना के सुमन
112. मूक उपदेश भाग-1
113. मूक उपदेश भाग-2
114. विशद प्रवचन पर्व
115. विशद ज्ञान ज्योति
116. जरा सोचो तो
117. विशद भक्ति पीयूष
118. विशद मुक्तावली
119. संगीत प्रसुन
120. आरती चालीसा संग्रह
121. भक्तामर भावना
122. बड़ा गाँव आरती चालीसा संग्रह
123. सहस्त्रकूट जिनार्चना संग्रह
124. विशद महाअर्चना संग्रह
125. विशद जिनवाणी संग्रह
126. विशद वीतरागी संत
127. काव्य पुञ्ज
128. पञ्च जाप्य
129. श्री चंवलेश्वर का इतिहास एवं पूजन चालीसा संग्रह
130. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
131. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

Ñfr % fo'kn JhHkDrkeje.My foèkku
Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxj th egkjkt
laLdj.k % izFke&2013* izfr;k¡ %1000
ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxj th egkjkt
lgk;ksxh % {kqYyd Jh 105 folksElkxj th egkjkt
laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh
la;kstu % lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh
lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155
izkfIr LFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZyd¢pkj xksèkk] 2142] fueZy fud¢pt] jsfM;ks ekdsZV efugkjksa dk jkLrk] t;iqj Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008
2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj ,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566
3- fo'kn lkfgR; dsUnz Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykyc¢Ùkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971
ewY; % 31@&#- ek=k

µ%vFkZ lkStU; %µ
श्रीमति सरोज जैन (मातेश्वरी)
श्री पंकज जैन श्रीमति रेणू जैन (पुत्र-पुत्रवधू)
श्री पीयूष जैन (पुत्र), सुश्री प्रेरणा जैन (पुत्री)
कृष्णा नगर, दिल्ली

eqnzd%ikjl izdk'ku ¼'kkgnjk fnYyh½ Qksu ua- %9811374961

Ñfr	%	**fo'kn Jh HkDrkej je.My foèkku**
Ñfrdkj	%	i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt
laLdj.k	%	izFke&2013 * izfr;k¡ %1000
ladyu	%	eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt
lg;ksxh	%	{kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt
laiknu	%	cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ vkLFkk nhnh] liuk nhnh
la;kstu	%	lksuw] fdj.k] vkjrh nhnh] mek nhnh
lEidZ lw=k	%	9829127533] 9953877155
izkfIr LFky	%	1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk] 2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV efugkjksa dk jkLrk] t;iqj Qksu %0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008
		2- Jh jktw'kdqekj tSu Bsdsnkj ,&107] cq)èk fogkj] vyoj] eks- %9414016566
		3- fo'kn lkfgR; dsUnz Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
		4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykyckxh pkSd] xka/khuxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971
ewY;	%	31@& #- ek=k

µ% vFkZ lkSStU; %µ

veu tSu] vuwi tSu] izosUnz tSu] foosd tSu

14, कृष्णा कुंज एक्स., लक्ष्मी नगर, दिल्ली

मो.: 9310987107, 9971221007, 9868899307

---

eqnzd% ikjl izdk'ku ¼'kkgnjk fnYyh½ Qksu ua- %9811374961